परमात्म ऊर्जा

जब तक त्याग नहीं तब तक सेवाधारी हो नहीं सकेंगे। सेवाधारी बनने से त्याग सहज और स्वतः हो जायेगा। सदैव अपने को बिज़ी रखने का सही तरीका है। संकल्प से, बुद्धि से, चाहे स्थूल कर्मणा से जितना फ्री रहते हो उतना ही माया चान्स लेती है। अगर स्थूल और सूक्ष्म- दोनों ही रूप से अपने को सदैव बिज़ी रखो तो माया को चान्स नहीं मिलेगा। जिस दिन स्थूल कार्य भी रूचि से करते हो उस दिन की चेकिंग करो तो माया नहीं आयेगी, अगर देवता होकर किया तो। अगर मनुष्य होकर किया, फिर तो चान्स दिया। लेकिन सेवाधारी हो और देवता बन अपनी रूचि, उमंग से अपने को बिज़ी रखकर देखो तो कभी माया नहीं आवेगी। खुशी रहेगी। खुशी के कारण माया साहस नहीं रखती सामना करने का। तो बिज़ी रखने की प्रैक्टिस करो। कभी भी देखा आज बुद्धि फ्री है, तो स्वयं ही टीचर बन बुद्धि से काम लो। जैसे स्थूल कार्य की डायरी बनाते हो, प्रोग्राम बनाते हो कि आज सारा दिन यह-यह कार्य करेंगे, फिर चेक करते हो। इसी प्रमाण अपनी बुद्धि को बिज़ी रखने का भी डेली प्रोग्राम होना चाहिए। प्रोग्राम से प्रोग्रेस कर सकेंगे। अगर प्रोग्राम नहीं होता है तो कोई भी कार्य समय पर सफल नहीं होता। रोज़ डायरी होनी चाहिए। क्योंकि सभी बड़े ते बड़े हो ना! बड़े आदमी प्रोग्राम फिक्स करके फिर कहाँ जाते हैं। तो अपने को भी बड़े ते बड़े बाप के समझकर हर सेकण्ड का प्रोग्राम फिक्स करो। जिस बात की प्रतिज्ञा की जाती है, तो उसमें विल-पॉवर होती है। ऐसे ही सिर्फ विचार करेंगे, उसमें विल-पॉवर नहीं होगी। इसलिए प्रतिज्ञा करो कि यह करना ही है। ऐसे नहीं कि देखेंगे, करेंगे। करना ही है। जैसे स्थूल कार्य जितना भी ज़्यादा हो लेकिन प्रतिज्ञा करने से कर लेते हो ना! अगर ढीला विचार होगा, न करने का ख्याल होगा तो कभी पूरा नहीं करेंगे। फिर बहाने भी बहुत बन जाते हैं। प्रतिज्ञा करने से फिर समय भी निकल आता है और बहाने भी निकल जाते हैं। आज बुद्धि को इस प्रोग्राम पर चलाना ही है- ऐसी प्रतिज्ञा करनी है। भिन्न-भिन्न समस्याएं, पुरुषार्थहीन बनने के व्यर्थ संकल्प, आलस्य आदि आयेंगे लेकिन विल-पॉवर होने कारण सामना कर विजयी बन जायेंगे। यह भी डेली डायरी बनाओ, फिर देखो, कैसे रूहानी राहत देने वाले रूह सभी को देखने में आयेंगे। रूह 'आत्मा' को भी कहते हैं और रूह 'इसेन्स', को भी कहते हैं। तो दोनों हो जायेंगे। दिव्य गुणों के आकर्षण अर्थात् इसेन्स, वह रूह भी होगा और आत्मिक स्वरूप भी दिखाई देंगे। ऐसा लक्ष्य रखना है। तो रूप की विस्मृति, रूह की स्मृति। बिल्कुल ऐसा अनुभव हो जैसे यह शरीर एक बॉक्स है। इनके अन्दर जो हीरा है उनसे ही सम्बन्ध स्नेह है। तो निवास स्थान का भी आधार लेकर स्थिति को बनाओ।

मुरसान-उ.प्र.। 'आध्यात्मिक काव्य सरिता' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए पूर्व चेयरमैन किरन शर्मा, नगर पंचायत अध्यक्ष गिर्राज किशोर शर्मा, लेखक व कवि डॉ.पवित्र शर्मा,धौलपुर, आशु कवि अनिल बोहरे, कवि श्याम बाबू चिंतन, कवि जयप्रकाश पचौरी, कवि चांद हुसैन, कवयित्री मंजू शर्मा,सादाबाद व रामबाबू पिप्पल,सादाबाद, भारतीय स्टेट बैंक मुरसान शाखा प्रबंधक शम्भू दयाल, कवि रोशनलाल वर्मा, कवि नूर मोहम्मद नूर,सादाबाद, ब्र.कु.भावना बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. बबिता बहन, ब्र.कु. पूजा बहन तथा अन्य।

कथा सरिता

एक बार एक चिड़िया अपना खाना चौंच में दबाकर ले जा रही थी,उसकी चौंच से पीपल के पेड़ का बीज नीम के तने में गिर गया। उस बीज को नीम से भरपूर पोषक तत्व, पानी और मिट्टी मिल गई और वो पीपल का बीज पनपने लगा और नीम के आश्रय में बड़ा होने लगा चूँकि वह नीम पर आश्रित था इसलिए उसे फलने-फूलने एवं उसकी जड़ों को पर्याप्त जगह नहीं मिल रही थी। उसका विकास ठीक से नहीं हो पा रहा था।

एक दिन पीपल को गुस्सा आया और उसने नीम से लड़ने की ठानी और बोला- ऐ! दुष्ट तू खुद तो फैलता ही जा रहा है। तेरा कद गगन छू रहा है और जड़ें पसरे जा रही हैं और मुझे तू ज़रा भी पनपने नहीं दे रहा। मुझे भी जगह और खनिज दे वरना तेरे लिए अच्छा नहीं होगा।

उसकी बात खत्म होने पर नीम ने हँसकर उत्तर दिया, हे मित्र! दूसरों की दया पर इतना ही विकास संभव है और अगर अधिक की अपेक्षा है तो स्वयं का भार खुद वहन करो, अपनी नींव बनाओ, अपने पैरों पर खड़े हो। यह सुनकर पीपल को बहुत गुस्सा आया पर बात सच थी इसलिए वो बस नीम को कोसने में लगा रहा।

आश्रित ज़िंदगी का अस्तित्व

एक दिन बहुत आंधी तूफान आया। नीम का वृक्ष तो ज्यों का त्यों खड़ा रहा, लेकिन वह आश्रित पीपल अपनी कमज़ोरी के कारण धराशाही हो गया और ज़मीन चाटने लगा। उसका क्षण का अस्तित्व भी खत्म हो गया। तभी दूर से एक बुजुर्ग ये सब देख रहा था। उन्होंने ये देख कर कहा- जो दूसरों के बल पर अपना आशियाना बनाते हैं वो इसी तरह मुँह के बल गिरते हैं।

शिक्षा : कभी-कभी परिस्थिति वश हम दूसरों पर आश्रित हो जाते हैं, लेकिन अगर हम उसे अपना हक मानने लगें तो गलत है, क्योंकि किसी की योग्यता का पता तब ही चलता है जब वह स्वयं के बल पर कुछ करता है।

कर्मों का फल भोगना निश्चित

एक सिद्ध आचार्य अपने शिष्यों के साथ तीर्थ यात्रा पर निकले। कुछ देर चलने के बाद वे थकान निकालने बीच घने जंगल में ही रूक गये। इतने में आचार्य को कुछ आवाज़ें सुनाई दी। ध्यान से सुनने पर आचार्य को समझ आया कि यह कुछ लोगों के रोने की आवाज़ है। उन्होंने शिष्यों को बोला बालकों! सुनो ये आवाज़ें कहाँ से आ रही हैं? तब शिष्य एक-दूसरे का मुँह देखने लगे क्योंकि उन्हें कोई आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। फिर भी गुरु के आदेशानुसार उन्होंने थोड़ी दूरी पर आकर देखा।

केवल आचार्य को एक गहरे, अंधेरे कुएँ से कुछ लोगों के रोने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। आचार्य ने कुएँ में झाँक कर देखा तो उन्हें 5 लोग बहुत ही बुरी दशा में रोते हुए दिखाई दिए, लेकिन शिष्यों को ना आवाज़ सुनाई दी और ना ही कुछ दिखाई दिया।

तब आचार्य ने उन पाँच लोगों को मुस्कुराते हुए देखा और पूछा- भाई किन कर्मों का भोग रहे हो? तब वे पाँचों और ज़ोर-ज़ोर से रूदन करने लगे।

तब आचार्य ने शिष्यों को बताया- यहाँ 5 प्रेत आत्मायें हैं। यह सुनकर शिष्य डर गये। तब आचार्य बोले बालकों डरो नहीं। तुम सभी इनसे ज़्यादा शक्तिमान हो क्योंकि तुम सब कर्मों से महान हो और ये सभी आज अपनी पिछली करनी का भोग रहे हैं। आज के समय में इनसे दुर्बल कोई नहीं है।

तब शिष्य ने पूछा, इन्होंने क्या किया है? तब पहली आत्मा ने उत्तर दिया कि वह पिछले जन्म में ब्राह्मण था। भिक्षा मांगता था लेकिन उस भिक्षा को भोग विलास में खर्च करता था। दूसरे ने उत्तर दिया वह क्षत्रिय था और अपनी शक्ति का दुरुपयोग निर्बल, असहाय गरीबों पर करता था। तीसरे ने उत्तर दिया कि वो बनिया था। बस खुद के फायदे की सोचता था और हमेशा मिलावट करके सामान बेचता था। जिस कारण कई लोग मारे गये। चौथे ने उत्तर दिया वह क्षुद्र था। बहुत आलसी और ज़िम्मेदारी से भागता था। अपने माता-पिता को पिटता था और दिन-रात नशा करता था। पाँचवें ने उत्तर दिया वह एक लेखक था। अश्लील कथायें लिखता था। उसने समाज को वासना का पाठ सिखाया था। इस तरह वे सभी पापी अपने पापों को भोग रहे हैं। उन्होंने आचार्य से निवेदन किया। आप गुरु हैं आप दुनिया वालों को समझायें कि बुराई का रास्ता क्षण की खुशी देता है, लेकिन इसका दंड कई जन्मों तक अंधकार में भोगना पड़ता है।

शिक्षा : मनुष्य को कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है फिर वो किसी भी जन्म में हो। कहते हैं जिस तरह ईश्वर हैं वैसे ही भूत भी होते हैं लेकिन वे जितने दुर्बल होते हैं उतना कोई नहीं। व्यक्ति कितना भी इतरा जाये, नियति उसके कर्मों का हिसाब रखती ही है,इसलिए सदैव सद्मार्ग पर चलें अगर गलती हुई भी है तो उसे सुधारें।

गया-एपी कॉलोनी(बिहार)। बुद्धा पुरुषार्थ पब्लिक स्कूल में आयोजित यूथ फेस्टिवल कार्यक्रम में डायरेक्टर नवल किशोर, प्राचार्य डॉ. अभय सिंभा, मिशेल साइमन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुनीता बहन, ब्र.कु. प्रतिमा बहन तथा अन्य।